• मां दुर्गा की...

विधि से करें पूजा

हिंदू धर्म शास्त्रों में कुल चार नवरात्र का वर्णन किया गया है। चैत्र और शारदीय नवरात्र के अलावा दो गुप्त नवरात्र भी होती हैं। गुप्त नवरात्र में नौ दिनों तक विधि-विधान से मां दुर्गा की पूजा करने वाले भक्तों को नवग्रहों से शांति मिलती है। आइए जानते हैं गुप्त नवरात्रि में कैसे करें मां दुर्गा की पूजा और किन चीजों का करें भोग...

आषाढ़ माह में गुप्त नवरात्र की शुरुआत 06 जुलाई को हो रही है। इस दिन कलश स्थापना का शुभ मुहूर्त प्रात: काल 05 बजकर 26 मिनट से लेकर 06 बजकर 43 मिनट तक रहेगा। पंचांग के अनुसार आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि 06 जुलाई को प्रात: 04:26 बजे प्रारंभ होगी। वहीं, इसका समापन 07 जुलाई को प्रात: 04:26 बजे होगा। ऐसे में इस वर्ष आषाढ़ गुप्त नवरात्रि 6 जुलाई से 15 जुलाई तक है।

गुप्त नवरात्र में ऐसे करें पूजा

आषाढ़ माह में पड़ने वाली गुप्त नवरात्र के नौ दिनों का खास महत्व होता है। इस दौरान आपको प्रात: काल स्नान करने के बाद मां दुर्गा की विधि विधान से पूजा करना चाहिए। ज्योतिष के अनुसार, गुप्त नवरात्र के दौरान धन-दौलत में वृद्धि के लिए मां लक्ष्मी के प्रतिमा पर कमल का फूल अर्पित करें। साथ ही रोज पूजा के दौरान मां दुर्गा को श्रृंगार सामग्री अर्पित करें। ऐसा करने से अखंड सौभाग्य की प्राप्ति होती है और जीवन में कभी किसी चीज की कमी नहीं होती है।

गुप्त नवरात्र में मां दुर्गा को इन चीजों का लगाएं भोग

प्रतिपदा- रोगमुक्त रहने के लिए प्रतिपदा तिथि के दिन मां शैलपुत्री को गाय के घी से बनी सफेद चीजों का भोग लगाएं।

द्वितीया- लंबी उम्र के लिए द्वितीया तिथि को मां ब्रह्मचारिणी को मिश्री, चीनी और पंचामृत का भोग लगाएं।

तृतीया- दुख से मुक्ति के लिए तृतीया तिथि पर मां चंद्रघंटा को दूध और उससे बनी चीजों का भोग लगाएं।

चतुर्थी- तेज बुद्धि और निर्णय लेने की क्षमता बढ़ाने के लिए चतुर्थी तिथि पर मां कुष्मांडा को मालपुए का भोग लगाएं।

पंचमी- स्वस्थ शरीर के लिए मां स्कंदमाता को केले का भोग लगाएं।

षष्ठी- आकर्षक व्यक्तित्व और सुंदरता पाने के लिए षष्ठी तिथि के दिन मां कात्यायनी को शहद का भोग लगाएं।

सप्तमी- संकटों से बचने के लिए सप्तमी के दिन मां कालरात्रि की पूजा में गुड़ का नैवेद्य अर्पित करें।

अष्टमी- संतान संबंधी समस्या से छुटकारा पाने के लिए अष्टमी तिथि पर मां महागौरी को नारियल का भोग लगाएं।

• शक्ति उपासना...

गुप्त नवरात्र

नवरात्र पर्व शक्ति उपासना का पर्व है। ब्रह्मांड में विद्यमान प्रकृति वह शक्ति है जो जीवन की गतिविधियों में अपना योगदान देती है। आषाढ़ माह में मनाया जाने वाला यह गुप्त नवरात्र पर्व सौभाग्य और मनोकामनाओं की पूर्ति का आशीर्वाद लेकर आता है। इस वर्ष आषाढ़ गुप्त नवरात्र 6 जुलाई 2024 दिन शनिवार से प्रारंभ हो रही है। गुप्त नवरात्र के दिन दुर्गा सप्तशती का पाठ करना चाहिए और मां दुर्गा के सभी स्वरूपों का स्मरण करना चाहिए। नवरात्र के दिन सुबह जल्दी उठकर मां का स्मरण करना चाहिए और उनके सामने तेल का दीपक प्रज्ज्वलित करके उनकी पूजा शुरू करनी चाहिए।

नवरात्र का त्योहार मां दुर्गा को समर्पित है। इस दौरान शक्ति के विभिन्न रूपों की पूजा की जाती है। शक्ति की पूजा में कई नियमों का पालन किया जाता है। साल में चार बार नवरात्रि मनाई जाती है, जिनमें से दो बार बहुत ही विस्तार से मनाई जाती है। पहली चैत्र माह में मनाई जाने वाली चैत्रीय नवरात्रि और दूसरी आश्विन माह में मनाई जाने वाली शारदीय नवरात्रि। दूसरी दो नवरात्र होती है जो गुप्त रूप से मनाई जाती हैं। यह नवरात्र तन्त्रत्र सिद्धि प्राप्त करने के लिए सामान्य जन से अलग रह रहे लोग करते हैं। यह गुप्त नवरात्र माघ माह और आषाढ़ माह में मनाई जाती है। मान्यता है कि इस गुप्त नवरात्र में मां की आराधना करने से दस महाविद्याओं की सिद्धियां प्राप्त होती हैं।

इस बार आषाढ़ गुप्त नवरात्र 6 जुलाई, शनिवार से शुरू होगी, जो 15 जुलाई, सोमवार तक रहेगी। यानी इस बार ये गुप्त नवरात्र 9 नहीं, बल्कि 10 दिनों की होगा, ऐसा चतुर्थी तिथि की वृद्धि होने के कारण होगा।

गुप्त नवरात्र एक चरण-दर-चरण प्रक्रिया है जिसमें शक्ति के सभी रंग प्रकट होते हैं। देवी काली, देवी तारा, देवी ललिता, देवी मां भुवनेश्वरी, देवी त्रिपुर भैरवी, देवी चिन्नमस्तिका, देवी मां धूमावती, देवी बगलामुखी, देवी मातंगी और देवी कमला इस शक्ति पूजा में प्रकट होंगी। इन सभी शक्तियों की पूजा मुख्य रूप से तांत्रिक साधना में की जाती है। गुप्त नवरात्रि में दस महाविद्याओं की पूजा को बहुत महत्व दिया जाता है। यह शक्ति के दस रूप हैं। प्रत्येक रूप अपने आप में पूर्ण है। इसमें ब्रह्मांड की कार्यप्रणाली और उसके भीतर छिपे रहस्य शामिल हैं। महाविद्या सभी जीवित प्राणियों का पालन करती है। इन दस महाविद्याओं को तांत्रिक साधना में बहुत शक्तिशाली माना गया है।

कैसे करें कलश स्थापना

इस बार आषाढ़ गुप्त नवरात्र 6 जुलाई, शनिवार से शुरू होगी, जो 15 जुलाई, सोमवार तक रहेगी। यानी इस बार ये गुप्त नवरात्र 9 नहीं, बल्कि 10 दिनों की होगा, ऐसा चतुर्थी तिथि की वृद्धि होने के कारण होगा। गुप्त नवरात्र एक चरण-दर-चरण प्रक्रिया है जिसमें शक्ति के सभी रंग प्रकट होते हैं...

- आषाढ़ मास की गुप्त नवरात्र पर देवी की पूजा करने के लिए सूर्योदय से पहले उठना चाहिए।
- स्नान आदि करके शुभ मुहूर्त का ध्यान रखते हुए पवित्र स्थान पर देवी की मूर्ति या चित्र को एक चौकी पर लाल रंग का कपड़ा बिछाकर रखें
- गंगा जल छिड़क कर स्थान को पवित्र करें।
- देवी की विधि-विधान से पूजा प्रारंभ करने से पहले मिट्टी के पात्र में जौ के बीज बो दें।
- इसके उपरान्त माता की पूजा के लिए कलश स्थापित करें।
- अखंड ज्योति का दिया जलाकर दुर्गा सप्तशती का पाठ और उनके मंत्रों का पूरी श्रद्धा के साथ जप करें।

आषाढ़ गुप्त नवरात्र 2024 की तिथियां

- **6 जुलाई, शनिवार**- इस दिन से आषाढ़ गुप्त नवरात्र की शुरूआत होगी। पहले दिन देवी शैलपुत्री की पूजा जाएगी।
- **7 जुलाई, रविवार**- ये आषाढ़ गुप्त नवरात्रि का दूसरा दिन रहेगा। इस दिन देवी ब्रह्मचारिणी की पूजा की जाएगी।
- 8 **जुलाई, सोमवार**- आषाढ़ मास की गुप्त नवरात्रि के तीसरे दिन देवी चंद्रघंटा की पूजा की जाती है।
- **9 जुलाई, मंगलवार**- ये गुप्त नवरात्र की चतुर्थी तिथि रहेगी। इस दिन देवी कूष्मांडा का विधान है।
- **10 जुलाई, बुधवार**- इस दिन भी गुप्त नवरात्र की चतुर्थी तिथि रहेगी। इस तरह 2 दिन चतुर्थी तिथि होने से ये नवरात्रि 10 दिनों की मानी जाएगी।
- **11 जुलाई, गुरुवार**- गुप्त नवरात्र की पंचमी तिथि पर देवी स्कंदमाता की पूजा की जाती है।
- **12 जुलाई, शुक्रवार**- इस दिन गुप्त नवरात्र की षष्ठी तिथि रहेगी। इस तिथि पर देवी कात्यायनी की पूजा की जाती है।
- **13 जुलाई, शनिवार**- आषाढ़ मास की गुप्त नवरात्र की सप्तमी तिथि पर देवी कालरात्रि की पूजा का विधान है।
- 14 जुलाई, रविवार- इस दिन आषाढ़ मास की गुप्त नवरात्र की अष्टमी तिथि रहेगी। इस दिन देवी महागौरी की पूजा की जाएगी।

15 जुलाई, सोमवार- ये गुप्त नवरात्र की अंतिम दिन रहेगा। इस दिन देवी सिद्धिदात्री की पूजा मुख्य रूप से की जाती है।

■ पं. कुलदीप शास्त्री

ना करें ये काम

गुप्त नवरात्र में माता का पूजन करने से भक्तों की हर मनोकामना पूरी होती है, लेकिन कुछ ऐसे काम हैं जिनको करने से माता रुष्ट हो जाती हैं और भक्तों को परेशानियां झेलनी पड़ती है। 6 जुलाई को ब्रह्म मुहूर्त में जाग कर माता की कलश स्थापना की जानी चाहिए और उसके बाद सुबह शाम पूजा अर्चना के बाद माता की आरती करने का विशेष प्रावधान है. इस दौरान दुर्गा सप्तशती का पाठ करने से माता की विशेष कृपा होती है। शास्त्र में कहा गया है की महिलाओं का मासिक धर्म के दौरान गुप्त नवरात्र में पूजा करना वर्जित है। गुप्त नवरात्र में व्रत का विशेष महत्व है गुप्त नवरात्र की अगर पूजा करें तो पति-पत्नी को ब्रह्मचर्य धर्म का पालन करना जरूरी होता है।

तंत्र साधना के और विशेष मनोकामना के लिए गुप्त नवरात्र की पूजा की जाती है। गुप्त यानि छिपा हुआ गुप्त नवरात्र के बारे में ज्यादा लोगों को जानकारी नहीं होती है इसलिए तंत्र साधना और अघोरियों के लिए विशेष पर्व होता है इस दौरान 10 महाविद्याओं की पूजा की जाती है और तांत्रिक और अघोरी मनचाहा वर प्राप्त करने के लिए गुप्त नवरात्र की पूजा करते हैं।

हर पूजा की अपनी विधि होती है अगर पूजा विधि विधान से न की जाए तो देवी देवताओं का गुस्सा भी हमें झेलना पड़ता है। गुप्त नवरात्रि में भी हर दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर घट स्थापना की विधि विधान से पूजन करना चाहिए जिससे कि मनोकामना पूरी हो और पूजा सफल हो, लेकिन कुछ ऐसे काम हैं जो बिल्कुल न करें, जिससे कि आपको माताजी के गुस्से का सामना न करना पड़े

- गुप्त नवरात्र के दौरान घर में प्याज लहसुन से भोजन नहीं पकाना चाहिए।
- इसके अलावा 9 दिनों तक बाल और नाखून भी नहीं काटने चाहिए
- माताजी को लाल और गुडहल के फूल तो पसंद है लेकिन भूल कर भी आक, दूब, तुलसी और मदार बिल्कुल अर्पित न करें।

• वास्तु...

मनी प्लांट

घर पर लगा मनी प्लांट शुभता का प्रतीक माना जाता है। इससे आर्थिक स्थिति बेहतर होती है और पॉजिटिविटी का वास होता है। लेकिन अगर इसकी पत्तियां पीली पड़ जए या सूख जाए तो तुरंत हटा देना चाहिए। वरना ये धन हानि का कारण बन सकती है। मनी प्लांट का पौधा लताओं वाला होता है। इसलिए जब यह बढ़ने लगे तो इसकी बेल को किसी धागे या छड़ी की सहायता से ऊपर की ओर चढ़ा दें। वास्तु के अनुसार, मनी प्लांट के बेल का जमीन पर स्पर्श होना अशुभ माना जाता है। इसका असर घर की सुख-समृद्धि पर पड़ता है। इस बात का ध्यान रखें कि, कोई कितना भी करीबी क्यों न हो अपने घर पर लगा हुआ मनी प्लांट किसी दूसरे को नहीं देना चाहिए। इससे घर की बरकत चली जाती है। वहीं मनी प्लांट का पौधा किसी को गिफ्ट भी नहीं करना चाहिए। वास्तु शास्त्र के अनुसार, मनी प्लांट हमेशा दक्षिण-पूर्व दिशा में ही लगाना चाहिए। यह दिशा भगवान गणेश की मानी जाती है। लेकिन इस बात का ध्यान रखें कि उत्तर-पूर्व में मनी प्लांट को न लगाएं।

• भगवान गणेश...

भगवान गणेश की कोई भी पूजा दुर्वा के बिना अधूरी मानी जाती है। बुधवार के दिन भगवान गणेश की पूजा में उन्हें 21 दुर्वा अर्पित करें। इससे जीवन में चल रही सभी परेशानियां दूर हो जाएगी। मनोकामना पूर्ति के लिए बुधवार के दिन गणेश जी के मंदिर जाकर सच्चे मन से प्रार्थना करें। बुधवार के दिन किसी गरीब या जरूरतमंद को हरी मूंग की दाल, हरे वस्त्र आदि का दान करें। साथ ही गाय को हरा घास या चारा खिलाएं। इससे आपका हर काम सफल होगा।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित